अतिरिक्त भाग

यरुशलेम नगर

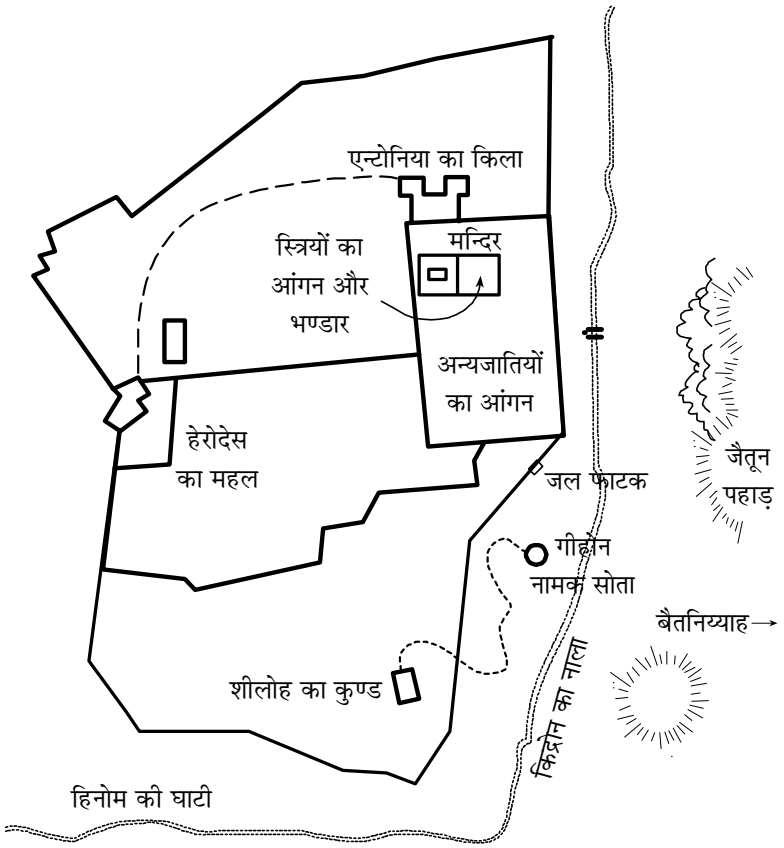
एन्टोनिया का किला
मन्दिर
स्त्रियों का
आंगन और
भण्डार
अन्यजातियों
का आंगन
हेरोदेस
का महल
जल फाटक
जैतून
पहाड़
गीहोन
नामक सोता
बैतनिय्याह→
शीलोह का कुण्ड
किद्रोन का नाला
हिनोम की घाटी

यीशु के दृष्टांत[1]

	मत्ती	मरकुस	लूका	किस भाग में
पैमाने के नीचे दीपक	5:14, 15	4:21, 22	8:16; 11:33	2
उगने वाला बीज		4:26-29		3
बुद्धिमान और मूर्ख घर बनाने वाले	7:24-27		6:47-49	2
पुराने वस्त्र पर नया पैबन्द	9:16	2:21	5:36	3
पुरानी मशकों में नया दाखरस	9:17	2:22	5:37, 38	3
क्षमा करने वाला देनदार			7:41-43	3
बीज बोने वाला और अलग-अलग किस्म की भूमि	13:3-8, 18-23	4:3-8, 14-20	8:5-8, 11-15	3
गेहूं के बीच जंगली बीज	13:24-30, 36-43			3
राई का बीज	13:31, 32	4:30-32	13:18, 19	3
खमीर	13:33		13:20, 21	3
छिपा हुआ खज़ाना	13:44			3
अनमोल मोती	13:45, 46			3
जाल	13:47-50			3
नई और पुरानी बातें	13:52			4
खोई हुई भेड़	18:12-14		15:4-7	4
निर्दयी सेवक	18:23-34			4
दाख की बारी के मज़दूर	20:1-16			5
दो पुत्र	21:28-32			5
दुष्ट किसान	21:33-44	12:1-11	20:9-18	5
विवाह का भोज	22:2-14			5
अंजीर का पेड़	24:32-35	13:28, 29	21:29-31	6

विश्वासयोग्य और बुद्धिमान दास	24:45-51		12:42-48	6
दस कुंवारियां	25:1-13			6
दास और तोड़े	25:14-30		19:12-27	6
भेड़ें और बकरियां	25:31-46			6
सावधान सेवक		13:35-37	12:35-40	6
दयालु सामरी			10:30-37	4
आवश्यकता के समय मित्र			11:5-8	4
धनी मूर्ख			12:16-21	4
अंजीर का अफल पेड़			13:6-9	4
दावत में स्थान			14:7-14	4
उपेक्षित निमन्त्रण			14:16-24	4
खर्च जोड़ना			14:28-33	4
खोया हुआ सिक्का			15:8-10	4
खोया (उड़ाऊ) पुत्र			15:11-32	4
बेईमान भण्डारी			16:1-8	4
एक स्वामी और उसका सेवक			17:7-10	5
एक हठी विधवा			18:2-8	5
फरीसी और चुंगी लेने वाला			18:10-14	5

टिप्पणी

[1]इस सूची में यीशु द्वारा प्रयुक्त हर चित्र संकेत, अलंकार और कहावत का इस्तेमाल नहीं किया गया, इसमें उन वाक्यों और कहानियां को शामिल गया गया है जिनका वर्गीकरण ज्यादातर दृष्टांतों के रूप में होता है।

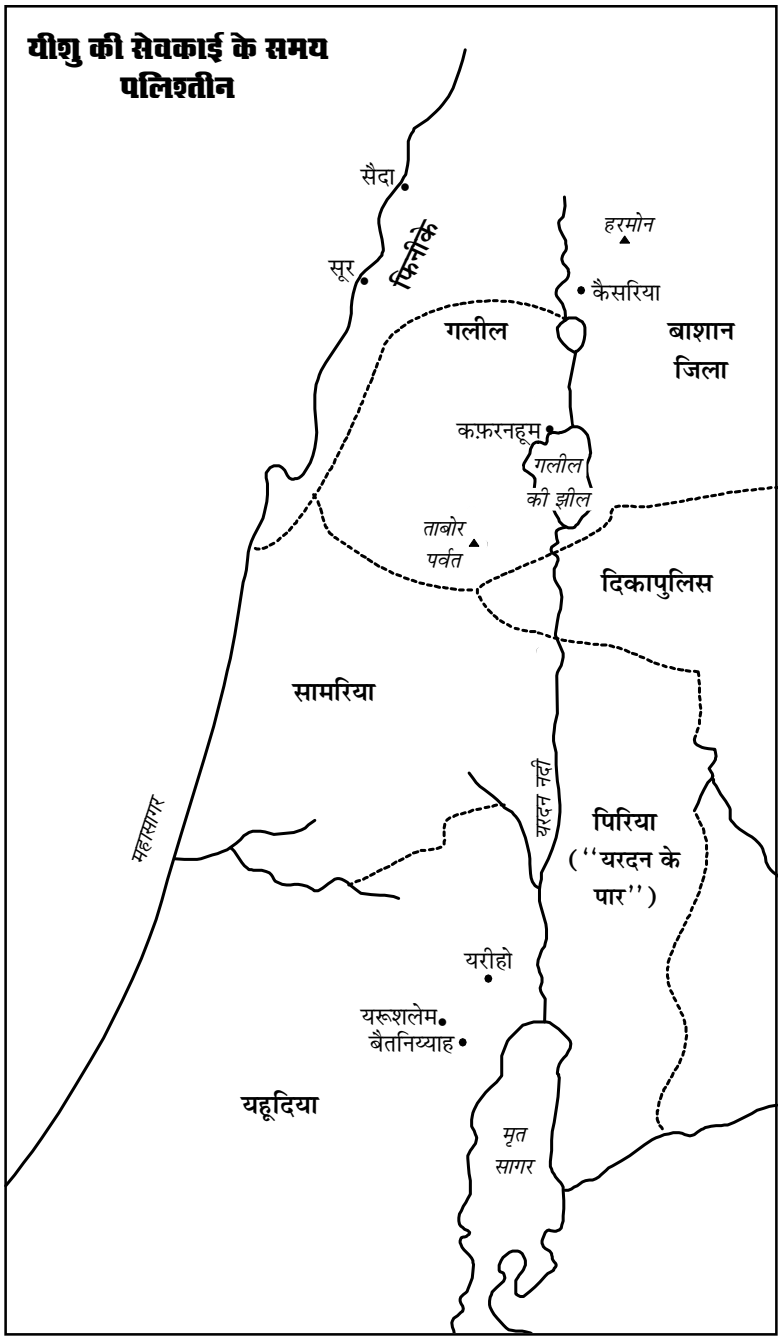
यीशु की सेवकाई के समय
पलिश्तीन
सैदा
सूर
फिनीके
हरमोन
कैसरिया
गलील
बाशान
जिला
कफ़रनहूम
गलील
की झील
ताबोर
पर्वत
दिकापुलिस
सामरिया
महासागर
यरदन नदी
पिरिया
(''यरदन के
पार'')
यरीहो
यरूशलेम
बैतनिय्याह
यहूदिया
मृत
सागर

क्या परमेश्वर किसी पापी की प्रार्थनाएं सुनता है?

हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त हो, और उस की इच्छा पर चलता हो, तो वह उस की सुनता है (यूहन्ना 9:31)।

यूहन्ना 9:31 का इस्तेमाल यह ''प्रमाणित'' करने के लिए किया जाता है कि परमेश्वर किसी बाहरी पापी (जो मसीही नहीं बना है) की नहीं सुनता, यदि वह उद्धार के लिए प्रार्थना करता है। नये नियम में किसी गैर मसीही को उद्धार पाने के लिए प्रार्थना करने को कहीं नहीं कहा गया, बल्कि नये नियम के पाठकों को उद्धार पाने के लिए प्रभु में विश्वास करने और उसकी आज्ञा मानने की बात सिखाई गई है (उदाहरण के लिए, देखें, प्रेरितों 2:36-38)। परन्तु, इन सच्चाइयों को साबित करने के लिए यूहन्ना 9:31 सबसे उपयुक्त पद नहीं है, क्योंकि (1) जिसने यह शब्द कहे उसे परमेश्वर की प्रेरणा नहीं थी; (2) इस पद में जिसे ''पापी'' कहा गया है, वे बाहरी पापी नहीं बल्कि परमेश्वर की अविश्वासी संतान (अर्थात आज्ञा न मानने वाले इस्राएली) थे।

यह सही है कि परमेश्वर व्यक्ति के अपने आज्ञा पालन के बिना उद्धार के लिए पापी की प्रार्थना का उत्तर नहीं देता (मत्ती 7:21-23)। यह भी सच है कि परमेश्वर किसी गैर मसीही की प्रार्थनाओं का वैसे उत्तर नहीं देगा जैसे वह अपने बच्चों की प्रार्थनाओं को सुनता (और उनका उत्तर देता) है (मत्ती 7:11)। (आप अपने बच्चों की इच्छाओं को मानना चाहेंगे या अपने पड़ोसी के बच्चों की विनतियों को?) तो भी हमारे पास कम से कम परमेश्वर द्वारा एक व्यक्ति की प्रार्थना सुनने का इतिहास है, जिसका उद्धार नहीं हुआ था: कुरनेलियुस (प्रेरितों 10:1-5; 11:14)। (कुरनेलियुस की प्रार्थना से सुसमाचार की आज्ञा मानने से पहले उसका उद्धार नहीं हुआ था, परन्तु परमेश्वर द्वारा उसकी प्रार्थना अवश्य सुनी गई *थी*।)

जो लोग बाइबल से थोड़ा बहुत परिचित हैं, वे अपने आस-पास यूहन्ना 9:31 को मोड़ सकते हैं। एक बार मैं किसी के साथ अध्ययन कर रहा था, जिसे अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक था। उसने यूहन्ना 9:31 पढ़ते हुए कहा, ''परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता, पर वह मेरी प्रार्थनाएं तो सुनता है। इससे स्पष्ट है कि मैं पापी नहीं हूं। मुझे बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं है।''

यूहन्ना 9:31 पर समझा रहे हों या किसी दूसरी आयत पर, हमें सावधान रहना चाहिए कि हम उन आयतों का इस्तेमाल *कैसे* करते हैं। हमें बड़ी ही ईमानदारी से काम करने की आवश्यकता है।

डेविड रोपर

''नरक'' से एक पत्र

अधोलोक का संसार
कल, आज और कल
प्रभु के आने के समय तक

प्रिय मित्र,

नि:संदेह मेरा पत्र पाकर आप आश्चर्यचकित होंगे। सच कहूं तो मैं खुद हैरान हूं। जीवित लोगों के साथ संवाद करने का अवसर पाना बिल्कुल अनहोना है। पता नहीं कि मुझे ऐसा अवसर क्यों दिया गया है, पर मुझे आशा है कि इससे अधिक से अधिक लोग लाभ उठाएंगे।

आप को मेरी कहानी भूली नहीं होगी, इसलिए मैं दोहराऊंगा नहीं कि मेरा जीवन कैसा था, बल्कि मैं आपको यही बताना चाहता हूं कि मैंने अपने अनुभवों से क्या सीखा है। मुझे बहुत देर बाद समझ आई, सो अब मैं दूसरों को यह संदेश देने के लिए आप पर निर्भर हूं। कृपया यह संदेश दूसरों तक पहुंचाएं, ताकि वे यहां न आ जाएं! परन्तु मैं अपनी कहानी से आगे बता रहा हूं।

''अपने जीवन को परमेश्वर के लिए इस्तेमाल करें''

पहली और शायद सबसे आवश्यक बात जो मैं आपसे कहना चाहता हूं, वह यह है कि हर किसी के जीवन का कोई न कोई उद्देश्य है। हमें पृथ्वी पर किसी उद्देश्य के लिए रखा गया था। वह उद्देश्य परमेश्वर की सेवा और उसकी महिमा करना है। कितना बुद्धिमान है वह इनसान जो *अपने जीवन को परमेश्वर के लिए इस्तेमाल* करना सीख जाता है!

पृथ्वी पर रहते समय मुझे यह बात पता नहीं चली थी। ऐसा नहीं है कि मैं बहुत बुरा व्यक्ति था। वास्तव में, जहां तक मुझे मालूम है, मेरे *किसी काम* की कभी किसी ने आलोचना नहीं की थी, बल्कि मेरी गलती वह है, जो मैंने *नहीं किया*।

लेखक की टिप्पणी: यदि आप इस असामान्य ढंग का इस्तेमाल करते हैं, तो आरम्भ करने से पहले समझा दें कि यह प्रवचन लूका 16:19-31 पर आधारित है और उन पदों में धनी मनुष्य द्वारा दिए गए विवरण के रूप में दिया जा रहा है।

यदि आप पूछते कि क्या मैंने अपना जीवन परमेश्वर को समर्पित किया था, तो मैं चकित होकर देखता और कहता, ''महोदय, मैं एक यहूदी हूं। मैं बड़े विश्वास से मन्दिर की सेवाओं में भाग लेता हूं। मैं ठहराए हुए बलिदान चढ़ाता हूं। मैं व्यवस्था की आज्ञा के अनुसार चंदा देता हूं और आप मुझ से पूछ रहे हैं कि क्या मैं अपना जीवन परमेश्वर के लिए दे रहा हूं!'' निश्चय ही, मैं समर्पित नहीं था। मैंने धर्मी होने की जगह धार्मिक होने की गलती की। आराधना में भाग लेना, बलिदान चढ़ाना, चंदा देना, ये सब बातें अच्छी हैं; परन्तु प्रभु के प्रति समर्पण से अलग होकर वे व्यर्थ और खोखली हैं। परमेश्वर चाहता है कि हमारा जीवन उसी पर केन्द्रित हो।

परमेश्वर को अपने मन में उस समय मैं इतनी कम जगह देता था कि अब मैं उसकी एक छोटी सी झलक को तरसता हूं!

''चीज़ों से भ्रमित न हों''

मेरी एक समस्या यह थी कि मैं सांसारिक वस्तुओं से भ्रमित हो गया था। पृथ्वी के लोगों का आज अधोलोक में आना इसी बात की ओर संकेत करता है कि आज भी लोग भौतिक वस्तुओं के भ्रम में हैं।

सांसारिक सम्पत्ति ने मुझे दो तरह से धोखा दिया। पहला तो यह कि मेरे जीवन में उनका बहुत ही महत्व था। मैं उस स्थिति का विश्लेषण इस प्रकार करता हूं (क्योंकि मेरे पास इस पर विचार करने के लिए बहुत समय है): आपको वस्तु तो *दिखाई* दे सकती है, परन्तु प्राण या परमेश्वर या आत्मिक वास्तविकताएं दिखाई नहीं देतीं। वस्तुओं की आपकी मांग बढ़ती जाती है, जबकि प्राण पीछे रह जाता है, इस प्रतीक्षा में कि आप उसकी ओर ध्यान दें। वस्तुएं आपकी पांच इन्द्रियों के द्वारा आपको आकर्षित करती हैं, जबकि आत्मा चुपके से अपनी ओर ध्यान खींचता है। जो वास्तव में महत्वपूर्ण है, उसकी तुलना में यह लगना कि भौतिक वस्तुएं कितनी आसान और थोड़े समय की हैं, कितना आसान है! इनमें से एक तो छोटी-छोटी बातों में जल्द ही पैक कर दी जाती हैं और परमेश्वर को भुला दिया जाता है।

इसके इलावा, वस्तुओं ने मुझे इस बात में भी भ्रमित किया कि मैंने उनकी बहुतायत को परमेश्वर की आशीष मान लिया। सम्पत्ति और लोगों के सम्मान से घिरे होने पर, मेरे मन में यह विचार ही नहीं आया कि मेरा जीवन प्रभु को भा नहीं रहा है। यह जानकर मैं कितना स्तब्ध रह गया था, जैसा पवित्र शास्त्र बताता है कि परमेश्वर रूप को नहीं, बल्कि मन को देखता है![1] वस्तुएं कितनी धोखा देने वाली हो सकती हैं!

मुझे गलत न समझें। एक समय था जब मैं बैंजनी और मखमली, अर्थात राजाओं और भद्रपुरुषों वाले वस्त्र पहनने का आनन्द लेता था। मैंने बड़ी-बड़ी दावतें खाईं। मुझे लोगों की प्रशंसा और अपने साथियों की तारीफ़ें अच्छी लगती थीं। अब वह सब ऐसे लगता है जैसे मेरे मुंह में राख हो। मैं चाहता हूं कि आप जान लें कि विलासिता का जीवन व्यर्थ है। बैंजनी और मखमली वस्त्रों के बदले धार्मिकता के सफ़ेद वस्त्र, पृथ्वी की शानो-शौकत के बदले

परमेश्वर के साथ आनन्द भोग, लोगों की तारीफ़ों के बदले परमेश्वर की स्वीकृति- सचमुच बड़ा ही सस्ता सौदा है!

सम्पत्ति होना अपने आप में बुरा नहीं है। सम्पत्ति पर ज़ोर देना अर्थात उसे दिया जाने वाला महत्व ही है, जो मनुष्य के प्राण के नाश का कारण बनता है। जब वस्तुएं आप पर नियन्त्रण कर लेती हैं, तो समझो आपका नाश हो गया।

हां इस बात को और भी दृढ़ता से कहने के कई और ढंग थे! उन लोगों के लिए जो अपने काम में इतनी लगन से लगे हुए हैं, उनके लिए जो दूसरों के बजाय हर लम्हा अपने लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं, उनके लिए जो आत्मिक बातों के बजाय भौतिक बातों पर मन लगाए हुए हैं, मैं पूरे ज़ोर के साथ कहता हूं: *ऐसी जीवन शैली किसी काम की नहीं है!* यहां आते ही सब समझ आ जाता है।

''मिले अवसरों का इस्तेमाल करें''

मनुष्य के लिए जो आवश्यक है वह यह है कि *सेवा करने के अवसर ढूंढ़े, न कि सेवा कराने के।* पीछे मुड़कर देखता हूं तो मुझे अहसास होता है कि मुझे बहुत अवसर मिले थे। बड़े अफ़सोस के साथ मुझे अब यह भी अहसास होता है कि हर अवसर ने इस बात की परीक्षा की कि मेरी नज़र में महत्वपूर्ण क्या है।

उस भिखारी पर विचार करें, जिसका नाम लाज़र था। (वह ऐसा उदाहरण है जिसे मैं कभी नहीं भूलूंगा!) यदि मैं इस बात पर विचार करने के लिए थोड़ा सा ध्यान देता, तो शायद मैंने कहा होता कि मेरा अनन्त उद्धार उस बेचारे के साथ व्यवहार पर ही निर्भर होगा। मैं कितना गलत था!

लगता है कि मैं उसकी उपस्थिति से अवगत था परन्तु दूसरी सब बातों की तरह मुझे बड़ी बातें छोटी लगती थीं और छोटी बातें बड़ी। पलिश्तीन में दर्जनों भिखारी थे। उसके शरीर पर कितने घाव थे; उसे टुकड़े उठाने के लिए कुत्तों के साथ कैसे लड़ना पड़ता था। मेरे पास इस एक और अपंग का क्या काम था? कुछ देर बाद, यह लाज़र मेरे द्वार की चौखट पर आता और मेरे ध्यान में भी नहीं होता था। मेरे पास तो विचार के लिए ''महत्वपूर्ण'' काम थे-कितना मूर्ख था मैं।

यदि मुझे कोई कहता कि मैं उस भिखारी की सहायता के लिए कुछ करता क्यों नहीं तो मेरे पास जवाब तैयार होता था: ''मैं मन्दिर में चंदा देता हूं; उनकी ज़िम्मेदारी है कि वे इसकी देखभाल करें''; ''मैं यदि इन भिखारियों में से किसी एक की देखभाल करता हूं, तो मुझे इन सब की देखभाल करनी पड़ेगी''; ''मेरे पास यही काम बचा है क्या।''

मैं दो बातें नहीं देख पाया: (1) उस गन्दगी और सड़न के नीचे एक इनसान था .. .एक इनसान जिसमें प्राण थे ... मेरे जैसा एक इनसान। उसकी सेवा न करके, मैंने अपने इनसान होने का इनकार किया। (2) *मेरे* द्वार पर पड़े होने का अर्थ था कि विशेष तौर पर वह *मेरी* ज़िम्मेदारी था। वह *मुझे मिला* अवसर और *मेरी* परख था, जिसमें मैं बड़ी बुरी तरह से असफल हो गया।

मैं थोड़ा सा व्यक्तिगत होना चाहता हूं: आपके युग के बारे में जो मैंने सुना है (उनसे जो प्रतिदिन यहां आते हैं) कि यह अवसर का युग है। यद्यपि अपने समय के मापदण्डों से मैं एक धनवान था, पर जो मेरे पास था, उसकी तुलना अब आपको मिलने वाली आशिषों से नहीं की जा सकती। मैंने दूसरों की सहायता करने के, अर्थात परमेश्वर के वचन को सिखाने के बड़े अवसरों, और सैकड़ों तरह से प्रभु की सेवा के लिए आपको मिले अद्‌भुत अवसरों के बढ़ने के बारे में भी सुना है। उससे जिसे यह पता है, आप सलाह ले लें कि अपनी आशिषों को हल्के ढंग से न लें। जो आशिषें आपको मिली हैं, उन्हें परमेश्वर के लिए इस्तेमाल करें। अपनी आशिषों को भलाई करने के अवसरों के लिए इस्तेमाल करें।

मुझे यह कठिन ढंग सीखना पड़ा था कि नाश होने के लिए लूटना, हत्या करना या अनैतिक होना आवश्यक नहीं है। *आवश्यक यही है कि भलाई करते हुए जीवन न बिता पाना है।* [2]

''नरक एक भयानक जगह है''

इससे मेरे मन में एक और विचार आया है–अगली बात जो मैंने सीखी और आपको बताना चाहता हूं, वह यह है कि अपने जीवन का इस्तेमाल परमेश्वर के लिए करें, *क्योंकि ''नरक'' एक भयानक जगह है!*

मैंने ''नरक'' शब्द को उद्धरण चिह्नों में इसलिए रखा क्योंकि मैं अभी नाश होने वालों के अनन्त स्थान में जिसे यूनानी भाषा में *गेहन्ना* कहा जाता है, नहीं गया हूं। अभी मैं मृतकों के बीच के स्थान अर्थात अधोलोक में हूं, जहां सब मरे हुए हैं। आपके संसार से आए मेरे कुछ साथी बताते हैं कि आपके यहां उपलब्ध बाइबल के अनुवादों में[3] यूनानी शब्दों के तीन अलग-अलग अनुवाद किए जाते हैं, जिससे ''नरक'' के तीन अलग-अलग अर्थ लगते हैं।[4] यह काफ़ी उलझन भरा होगा। मेरी कहानी ''नरक'' (आपके पवित्र शास्त्र में लूका 16 अध्याय में पाया जाने वाला) में ''हेडिस'' शब्द होना चाहिए।[5] इस यूनानी शब्द का अर्थ ''अदृश्य [संसार]'' है। यह ''हेडिस'' ऐसा स्थान नहीं लगता, जिसमें अस्तित्व लगता हो। निश्चय ही, इस अवधारणा को आप किसी भी तरह पूरी रीति से नहीं समझ सकते; तो केवल इस बात को मान लें कि एक दिन, जब तक मसीह आपके मरने से पहले नहीं आ जाता, तब तक आप वहीं रहेंगे और फिर आपको पता चलेगा कि यह जगह कैसी है।

हेडिस मरे हुओं की आत्माओं का स्थान है, चाहे वे भले लोग हों या बुरे। यह वह स्थान है, जहां हम अन्तिम न्याय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसमें एक ''भाग'' (जो उचित शब्द नहीं है, पर बात को समझाने के लिए मेरे ध्यान में यही शब्द आता है) जहां भले लोग हैं और एक और ''भाग'' है, जहां दुष्ट लोग पाए जाते हैं। सो आप जान सकते हैं कि मैं नरक में नहीं बल्कि अन्तिम दण्ड की प्रतीक्षा के लिए हेडिस में हूं।

यह कहने के बाद मैं आपसे यह कहता हूं कि वास्तविक व्यवहार में, मृतकों के बीच के स्थान और मृतकों के अन्तिम स्थान में अधिक अन्तर नहीं है। जो परमेश्वर के साथ विश्वासयोग्य थे, वे यहां बेहद खुश हैं और हम में से जो लोग प्रभु के विश्वासी नहीं थे, बुरी

तरह से दुखी हैं।

मेरे पास उस अधोलोक के संसार का, जिसमें मैं हूं, खौफ़नाक दृश्य दिखाने का कोई ढंग नहीं है। यह मानवीय समझ से बहुत परे है। इस स्थान में बिताया एक क्षण ही यह विश्वास दिलाने के लिए काफ़ी है कि उसे तुरन्त परमेश्वर के पास जाना चाहिए। अपनी पीड़ा को व्यक्त करने के मेरे प्रयास अपर्याप्त ही होंगे, पर शायद आपको समझाने के लिए कि आप यहां न आएं, कुछ बातें सहायक हो सकती हैं।

पीड़ा का स्थान

पहले तो, अधोलोक का हमारी ओर का भाग पीड़ा का स्थान है। इस पीड़ा को व्यक्त करने वाला कोई शब्द किसी भी भाषा में नहीं है। सुना है कि आपके पवित्र शास्त्र में इस विचार को समझाने के लिए आग के रूपक का इस्तेमाल किया जाता है। यह रूपक अच्छा है। यदि आप कभी आग से बचे हों, तो आपको पता होगा कि यह कितना पीड़ादायक हो सकता है। उस पीड़ा को याद करने की कोशिश करें। फिर अपने शरीर के एक-एक भाग के आग में जलने की कल्पना करें। अन्त में, *अन्दर से* अर्थात आग पर अनन्तकाल के लिए अपनी आत्मा के जलने, अनन्तकाल तक जलने, पर फिर भी खत्म न होने की कल्पना करने की कोशिश करें।

इसका विचार ही मुझे पागल जैसा बना देता है! हां, थोड़ी सी राहत के लिए! जीभ पर पानी की छोटी सी बूंद भी! कोई राहत! इस दर्द, इस पीड़ा, को अनन्तकाल के लिए सहना ... मैं कैसे सह सकता हूं?

मुझे अपने आप को खींचकर इस पत्र को बन्द करना होगा। आप कभी समझ नहीं पाएंगे कि मेरे लिए इन परिस्थितियों में मेरे विचारों को संकलित करना कितना कठिन है। यह प्रयास लगभग मेरी सामर्थ से बाहर है, परन्तु यदि मैं एक आत्मा को यहां आने से रोक पाऊं, तो मेरा प्रयास व्यर्थ नहीं जाएगा।

स्मरण का स्थान

इस तथ्य से कि यह पीड़ा का स्थान है और भी भीषण यह तथ्य है कि इसमें याद रहता है। मेरे समय में, सदूकी लोग बहस करते थे कि मनुष्य में आत्मा नहीं होती और इस कारण, मृत्यु के समय व्यक्ति अचेत रहता होगा। काश ऐसा हो जाता! सच्चाई यह है कि मृत्यु के बाद व्यक्ति पूरी तरह से सचेत होता है और पिछली सब बातें याद कर सकता है कि वह कहां है, उसके साथ पहले कभी क्या हुआ था और अनन्तकाल में क्या होगा।

जब मन को शारीरिक देह से छुटकारा मिल जाता है, तो इसमें समझ की अधिक क्षमता आ जाती है। मैं नहीं जानता कि क्यों। हो सकता है कि शरीर से मुक्त मन परमेश्वर के सर्वज्ञ, और सर्वव्यापक मन के साथ मेल करने के योग्य हो-जो कि एक शानदार स्थिति है, यदि आप उद्धार पाए हुओं के स्थान में हैं, पर यदि आप नाश होने वालों के स्थान में हैं तो यह एक भयानक स्थिति है! जो भी हो, मुझे अब वे बातें पता चल सकती हैं, जो पहले

बिल्कुल पता नहीं थीं। उदाहरण के लिए, मैंने अब्राहम को पहचान लिया (जो धर्मियों के क्षेत्र में अधोलोक के ''दूसरी ओर'' था), जिसे मैंने पहले कभी देखा नहीं था।

मुझे अपनी पिछली बातें भी याद हैं-यादें जो लगभग 2000 वर्ष बाद भी मुझे भूली नहीं हैं, यादें जो मुझे बेरहमी से सताती हैं। मैं अब्राहम के शब्द कभी नहीं भूलूंगा, जब उसने कहा था, ''हे पुत्र, स्मरण कर ...।'' जैसे कि मैं उन खोए हुए अवसरों को भूल सकता हूं; जैसे कि मैं यह भूल सकता हूं कि मैंने कैसे अपना जीवन व्यर्थ गंवाया; जैसे कि मैं भूल सकता हूं कि मेरे लिए छुटकारा पाए हुए लोगों में जाना कितना आसान था!

हाल ही में एक आगन्तुक ने मुझे उन विशाल पोतों के बारे में बताया है, जो आपने आकाश में छोड़े हैं, जिन्हें रॉकेट कहते हैं। वह मुझे बताता है कि आकाश में छोड़ने के समय आरम्भ में थोड़ा-सा चूक जाने से वह रॉकेट अपने लक्ष्य से लाखों मील दूर चला जाता है। अनन्तकाल उससे कितना मिलता-जुलता है। छोटी-छोटी बातें, छोटी-छोटी प्राथमिकताएं, सही या गलत करने के महत्वहीन लगने वाले निर्णय-यही तो हैं जिनसे हमारा अनन्त भविष्य तय होता है। यदि आप यहां आते हैं, तो मेरी ही तरह आप भी अनन्तकाल के लिए उन ''छोटे-छोटे'' निर्णयों को याद करके अपने आप से कहेंगे: ''मैंने ऐसा क्यों किया? मैंने वैसा क्यों नहीं किया?''

उद्धार पाने वालों के लिए स्मरण करना बड़ी ही आशीष की बात होगी, पर नाश होने वालों के लिए याद करना समझ से परे का श्राप है। विडम्बना यह है कि यदि आप इस संदेश पर ध्यान नहीं देते और किसी प्रकार यहां आ जाते हैं, तो आपको फिर भी याद रहेगा कि मैंने आपको चौकस किया था और फिर आप मेरी बात न मानने के लिए अनन्तकाल के लिए अपने आप को कोसेंगे।

स्थाई स्थिति

राहत की कोई उम्मीद होती तो हमारी परिस्थितियां सहनीय हो सकती थीं। यदि हमें पता होता कि एक हज़ार वर्ष, एक लाख वर्ष या एक करोड़ वर्ष के बाद यह सब समाप्त हो जाएगा, तो हम किसी न किसी तरह यह कष्ट सह लेते, पर ऐसा नहीं है। यहां आरम्भ हुई पीड़ा *गेहन्ना* में रहती है और स्थाई ही है।

पहली बार यहां आने पर अब्राहम के शब्द सुनने कितने भयानक थे! ''इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गड़हा *ठहराया गया है* कि जो यहां से उस पार जाना चाहें, वे न जा सकें; और न कोई वहां से इस पार हमारे पास आ सके।''[6] एक भारी गड़हा ... एक भारी गड़हा जो परमेश्वर का ढंग ठुकराने के समय हम ने खुद खोदा था[7] ... हां, एक भारी गड़हा अनन्तकाल के लिए ठहराया हुआ है!

मेरे मित्र, मेरी बात पर ध्यान दें: उन लोगों की बात पर विश्वास न करें, जो आपको बताते हैं कि इस स्थिति से निकलने का कोई रास्ता है। उन लोगों का भरोसा न करें, जो कहते हैं कि वे कुछ पैसे लेकर इस समय को कम कर सकते हैं। यह पीड़ा कभी खत्म नहीं होगी। हम में से जो आज इस पीड़ा में हैं, वे कल भी इसी पीड़ा में रहेंगे और हज़ारों, लाखों

वर्षों बाद भी, करोड़ों वर्षों के बाद और उसके बाद भी यहीं रहेंगे। हमें कभी राहत नहीं मिलेगी। हम नरक में कल के पूर्वाभास से दुख उठाते हैं और हम वास्तव में कल और अनन्तकाल के लिए नरक में दुख उठाएंगे![8]

''ध्यान देने का समय अभी है''

मैंने दो बातों पर ज़ोर दिया है: (1) अपने जीवन को परमेश्वर के लिए इस्तेमाल करें, क्योंकि (2) ''नरक'' एक भयानक जगह है। इससे लगता है कि मुझे अन्तिम सीख दे देनी चाहिए कि *ध्यान देने का समय अभी है।*

दूसरों के बारे में अभी ही सोचें

मरने से पहले, आपको पता नहीं चल पाएगा कि मरना कितनी हैरानी की बात है। आप बहुत-सी योजनाएं बनाते हैं। आप कई काम करने की सोचते हैं। फिर-एक झपकी-और आप मर गए। तैयार हों या न, आपका जीवन समाप्त हो चुका है।

मैंने यह बात इसलिए की क्योंकि यदि आप किसी दूसरे की सहायता करना चाहते हैं, तो आपके पास अभी समय है। आपकी मृत्यु आज ही हो सकती है। मैं आपको डराने की कोशिश नहीं कर रहा हूं; मैं तो आपको वास्तविकता बता रहा हूं।

मेरे पांच भाई थे। पृथ्वी पर रहते हुए मैंने जो काम *नहीं* किया, वह उनकी आत्माओं की स्थिति का ध्यान करना था। मैं उन्हें समय-समय पर मिलता था। कभी-कभी हमारे परिवार इकट्ठे हो जाते थे। परन्तु उनकी आत्मिक स्थिति का मैंने कभी ध्यान नहीं किया। फिर जब मेरी मृत्यु हो गई और मुझे समझ आया कि जीवन क्या है, और मैंने इस दण्ड की पीड़ा का अनुभव किया, तो मेरे ध्यान में आया कि उन्होंने तो कोई तैयारी ही नहीं की है। मैंने मिन्नत की और विनती की कि किसी तरह मुझे उनके पास वापस जाने दिया जाए। मैं चाहता था कि मुझे या लाज़र को या उनमें से किसी को यह कहने के लिए भेजा जाए कि वे ''अपने जीवन बदल लें!''

वापस जाने का कोई ढंग नहीं है। सुना है कि आपके संसार के कुछ लोग मुर्दों के साथ बात करने का दावा करते हैं। वे या तो झूठे हैं या अपने आप को धोखा देते हैं। मेरे भाइयों को संदेश पहुंचाने का कोई तरीका नहीं था। मेरे पास अवसर खत्म हो चुके थे। इस तरह एक-एक करके मेरे भाई मर गए। एक-एक करके वे यहीं आए। उनकी चीखें और विलाप कितनी भयानक हैं, जिनसे मैं कभी प्रेम करता था!

आप के लिए सबसे विशेष व्यक्ति कौन है? कोई सम्बन्धी? कोई मित्र? कोई पड़ोसी? तो जाकर अभी उसे बताएं। उसे परमेश्वर और अनन्तकाल के बारे में बताएं। उसे समझाएं (जैसे बहुत पहले अब्राहम ने मुझे समझाया था) कि परमेश्वर की इच्छा जानने का एकमात्र ढंग पवित्र शास्त्र है। फिर उन से वह पुरुष हो या स्त्री, पिता के पास आने का आग्रह करें। उनसे आग्रह करने में कायरता या घमण्ड आपके रास्ते में रुकावट न बने। मिन्नत करें, विनती करें, आग्रह करें, याचना करें-क्योंकि एक आत्मा दांव पर लगी है, वह

आत्मा जो अनन्तकाल के लिए कहीं न कहीं रहेगी।

मेरी मृत्यु के कुछ समय बाद की बात है, क्रूस पर मसीहा मरा था–जिसे आप लोग यीशु कहते हैं। उन तीन दिनों के समय में जब वह मरा हुआ था, उसकी आत्मा यहां अधोलोक में थी।[9] मैं उसे यहां गड्ढे के पार से देख सकता था, और छुटकारा पाए हुओं के आनन्द का शोर सुन सकता था। वह सचमुच अद्‌भुत उद्धारकर्त्ता होगा। निश्चय ही, यदि आप लोगों को उसके बारे में बता सकें तो बहुत से लोग उसे मानना चाहेंगे। वे न भी मानें, तौ भी आपको पता चल जाएगा कि जो कुछ आप उनके लिए कर सकते थे, आपने किया है।

अब अपने बारे में ध्यान दें

दूसरों का ध्यान करने से पहले आपको अपना ध्यान भी करना आवश्यक है। यहां पर हर कोई राहत के लिए, थोड़ी सी राहत के लिए लगातार पुकार रहा है। इसके साथ ही, हम जानते हैं कि मृत्यु *के बाद* की राहत केवल मरने *से पहले* ही पाई जा सकती है। तभी हमारे पास अवसर था।

अनुग्रह के युग में, व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं द्वारा बताई गई आशिषों का आनन्द लेना कितना अद्‌भुत होगा! सुना है कि इस अन्तिम युग में उद्धार की शर्तें लोगों के लिए यीशु के बलिदान में भरोसा करना, यीशु की ओर लौटना और बपतिस्मे में उसके साथ गाड़े जाना (डुबोए जाना) हैं।[10] भटक जाने वालों को मन फिराव, अंगीकार और प्रार्थना के द्वारा उसके पास वापस आने के लिए कहा जाता है।[11] मुझे तो यह बड़ा आसान लगता है; समझ नहीं आता कि कोई इन बातों से इनकार कैसे कर सकता है। मैं अपने आप को तो भूल ही गया हूं–मैंने भी तो अवसर खो दिया था, जिस कारण इतनी बड़ी त्रासदी हो गई है।

ऐसा ही होगा? बेशक, यदि लोगों को पता हो कि जीवन क्या है, और यदि उन्हें पता हो कि मृत्यु के परदे के आगे क्या है, तो वे अपने जीवनों को जाचेंगे और वहां अपनी आवश्यकताओं को देखकर उन आवश्यकताओं का ध्यान करेंगे। इसलिए, मेरी कहानी हर ऐरे–गैरे को बताना। इन सच्चाइयों को हर इनसान को जो भी आपसे मिलता है, बताना। उन्हें तन मन से बताना, क्योंकि आत्माओं का उद्धार या दण्ड पाना आपके कंधों पर है। यदि, बताने से एक भी आत्मा परमेश्वर की ओर आती है या प्रभु के उद्धार को स्वीकार करने के लिए आती है, तो मेरा दुख सहना व्यर्थ नहीं जाएगा।

परन्तु, पहले अपने उद्धार को सुनिश्चित कर लेना। मेरे मित्र, मैं नहीं चाहता कि तुम यहां अनन्तकाल के लिए रहो, जहां मैं रह रहा हूं।

हमेशा के लिए अलविदा (उम्मीद करता हूं)।

जैसा कि तुम जानते ही हो:

लूका 16 अध्याय वाला धनी मनुष्य

नोट्स

यह ट्रैक्ट रूप में छपे एक संक्षिप्त विवरणात्मक प्रवचन का दोहराया जाना है। यह

प्रवचन हाउन से अनुमति लेकर छापा गया है। कई साल पहले मुझे एक प्रचारक ने इस धनवान की ओर से मिला पत्र पढ़ने की बात बताई थी। पता नहीं किस प्रचारक ने यह कहा था, पर ''नरक से पत्र'' की प्रेरणा मुझे इसी से मिली थी।

इसे एक प्रवचन के रूप में इस्तेमाल करते हुए, मैं प्रस्तुति से पहले किसी को लूका 16:19-31 पढ़ने के लिए कहता हूं। उठने पर, मैं श्रोताओं को याद दिलाता हूं कि इस धनवान को अपने भाइयों के साथ बात करने की अनुमति नहीं मिली थी। फिर मैं पूछता हूं, ''यदि उसे उनके साथ बात करने की अनुमति मिल जाती तो क्या होता? यदि यह उसी का संदेश होता? यदि उसे आज हमारे साथ बात करने की अनुमति होती? उसने हमें क्या बताने की इच्छा करनी थी? आज लूका 16 के सामर्थी संदेशों को प्रचार करने के एक माध्यम के रूप में, मैं आपसे चाहता हूं कि यह कल्पना करें कि उस धनवान को आपको पत्र लिखने की अनुमति मिल गई है।'' मैं ''एक मित्र, अमेरिका'' के नाम आया एक बड़ा लिफाफा खोलता हूं। लिफाफे के बाईं ओर ऊपर कोने में ''धनवान, अधोलोक का संसार'' लिखा हुआ है। लिफ़ाफे से पत्र निकालकर पढ़ना आरम्भ करता हूं।

इस अध्ययन की टिप्पणियां धनवान के मेरे पत्र पढ़ने के लिए जोड़ी गई हैं। मैं रुकता हूं, ऊपर देखता हूं, टिप्पणी करता हूं और फिर पढ़ने लगता हूं।

क्या इस प्रस्तुति का ढंग आपके लिए और उनके लिए जिनमें आप प्रचार करते हैं, उपयुक्त है? इसका उत्तर केवल आप ही दे सकते हैं।

टिप्पणियां

[1]स्पष्टतया, धनवान यहां 1 शमूएल 16:7 की बात कर रहा है। [2]उसके ध्यान में मत्ती 25:31-46 होगा। [3]यह अंग्रेज़ी बाइबल का किंग जेम्स या ऑथोराइज़्ड वर्ज़न ही हो सकता है। [4]तीन यूनानी शब्द *गेहन्ना* (*gehenna*) (जो दुष्ट लोगों के अन्तिम निवास-''आग की झील'' के लिए है), *हेडिस* (Hades) (जिसका अक्षरश: अर्थ ''अदृश्य [संसार]'' है और न्याय की प्रतीक्षा करने वाली सभी आत्माओं की चाहे वे भली हों या बुरी-बात करता हो), और *टारटरस* (*tartarus*) (अधोलोक का वह भाग जहां दुष्ट लोग न्याय की प्रतीक्षा करते हैं) हैं। पहले पर, देखें मत्ती 23:33; दूसरे पर देखें प्रेरितों 2:31; तीसरे पर देखें पतरस 2:4. [5]KJV में लूका 16:23 में ''अधोलोक'' के लिए ''hell'' जबकि NASB में ''Hades'' है। [6]अब्राहम की इस बात की लूका 16:26 में पुष्टि होती है। [7]शायद यह धनवान यशायाह 59:1, 2 और इससे मिलते-जुलते पदों की बात कर रहा है। [8]किसी ने यह हवाले टिप्पणियों में जोड़े हैं: मत्ती 25:46; मरकुस 9:44; प्रकाशितवाक्य 14:11. [9]यह प्रेरितों 2:31 से मेल खाता है। [10]यह धनवान नये नियम के वचनों की अच्छी जानकारी रखता लगता है। यह मरकुस 16:16, प्रेरितों 2:38 और रोमियों 6:3-7 जैसे पदों की अच्छी समीक्षा है।

[11]यह कथन प्रेरितों 8:22, 23, याकूब 5:16 और 1 यूहन्ना 1:9 की अच्छी समीक्षा है।